॥ओ३म्॥

प्रकाशन सूची (2018)

रामलाल कपूर ट्रस्ट के वैदिक वाङ्मय का अनुसन्धान एवं प्रकाशन का गरिमापूर्ण 91 वाँ वर्ष

स्वाध्यायाद् योगमासीत योगात् स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याययोगसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते॥
महर्षि वेदव्यास (योग॰ १.२८)

रामलाल कपूर ट्रस्ट

रेवली, पो०–ई०सी०-मुरथल, सोनीपत (हरियाणा)
पिन–131039, दूरभाष सं०– 07082111456
E-mail- rlktrust@yahoo.in

रामलाल कपूर ट्रस्ट
द्वारा
प्रकाशित और प्रसारित ग्रन्थ

I. वेद-विषयक ग्रन्थ

१. **ऋग्वेदभाष्य**—(संस्कृत, हिन्दी, प्रथमभाग ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित) प्रतिभाग सहस्राधिक टिप्पणियाँ, १०–११ प्रकार के परिशिष्ट व सूचियाँ भी दी गई हैं। अत्यन्त शुद्ध संस्करण, बढ़िया कागज और छपाईयुक्त— अप्राप्य

२. **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**—सम्पादक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। शतशः टिप्पणियों से युक्त— १८०.००

३. **भूमिकाभास्कर**—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती—दो भागों में पूर्ण— प्रथमभाग ३५०.००, द्वितीयभाग २५००.००

४. **ऋग्वेदानुक्रमणी**—वेङ्कटमाधवकृत—इस ग्रन्थ में स्वर, छन्द आदि आठ वैदिक विषयों पर गम्भीर विचार किया गया है। प्रत्येक वेदार्थ के जिज्ञासु के लिए यह ग्रन्थ परम उपयोगी है। २००.००
व्याख्याकार—श्री डॉ० विजयपाल जी विद्यावारिधि। २००.००

५. **कात्यायनीया ऋक्सर्वानुक्रमणी**—(ऋग्वेदीया)—षड्गुरुशिष्य विरचित संस्कृत टीका सहित। इसमें ऋग्वेद के प्रतिमन्त्र ऋषि, देवता और छन्दों का संकलन है। इस संस्करण में टीका का पूरा पाठ प्रथम बार छापा गया है। विस्तृत भूमिका और अनेक परिशिष्टों से युक्त। बढ़िया छपाई, सुनहरी जिल्द। ४००.००

६. **ऋग्वेद की ऋक्संख्या**—(संस्कृत, हिन्दी)—लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें ऋग्वेद की विविध विद्वानों द्वारा दर्शाई गई मन्त्रसंख्या की समालोचना और शुद्ध वास्तविक मन्त्रसंख्या दर्शाई गई है। १०.००

७. **ऋग्वेद-परिचय**—श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्त्तण्ड। ऋग्वेद का परिचयात्मक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। ४०.००

८. **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-परिशिष्ट**—भूमिका पर किए गए आक्षेपों के ग्रन्थकार द्वारा दिये गए उत्तर। अप्राप्य

९. **यजुर्वेदभाष्य-विवरण**—ऋषि दयानन्द कृत भाष्य पर पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत विवरण। इसमें ऋषि दयानन्द के भाष्य का शुद्ध पाठ और उसकी पुष्टि में प्रतिमन्त्र प्रमाण दिये गए हैं। मन्त्रों के पदों की सस्वर व्याकरणप्रक्रिया लिखी गई है। प्रथमभाग १२००.००
द्वितीयभाग ८००.००

१०. **माध्यन्दिनपदपाठः**—(यजुर्वेद-पदपाठ)— ३००.००

११. **तैत्तिरीयसंहिता**—(मूलमात्र)—मन्त्रसूचीसहित १५०.००

१२. **तैत्तिरीय-संहिता-पदपाठः**—दाक्षिणात्यपाठानुसारी। बृहद् आकार में। ३००.००

१३. **तैत्तिरीय प्रातिशाख्य** (मूल) २०.००

१४. **अथर्ववेदभाष्य**—पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय कृत—
१-३ काण्ड १००.००, ४-५ काण्ड १००.००, ६ काण्ड १००.००, ७-८ काण्ड १००.००, ९-१० काण्ड १००.००, ११-१३ काण्ड १२०.००, १४-१७ काण्ड १००.००, १८-१९ काण्ड १००.००, २० वां काण्ड १००.००

१५. **अथर्ववेदीय-दन्त्योष्ठ्यविधि**—अर्थात् अथर्ववेद का चतुर्थ लक्षणग्रन्थ—भूमिका तथा टिप्पणी युक्त आर्यभाषानुवाद सहित—सम्पादक—पं० रामगोपाल शास्त्री। ५.००

१६. **अथर्ववेदीया बृहत्सर्वानुक्रमणिका**—भूमिका तथा सूचियों सहित—सम्पादक—पं० रामगोपाल शास्त्री। ६०.००

१७. **गोपथब्राह्मण** (मूल) सं०—डॉ० विजयपाल जी विद्यावारिधि। सभी संस्करणों में अधिक शुद्ध और सुन्दर संस्करण। १००.००

१८. **वैदिक-निघण्टु-संग्रह**—सं०—डॉ० धर्मवीर विद्यावारिधि। इसमें कौत्सव्य और यास्कीय निघण्टु के साथ भास्कर राय विरचित **वैदिक कोश,** वेंकट माधव कृत **आख्यातानुक्रमणी** और **नामानुक्रमणी** भी हैं। यन्त्रस्थ

१९. **वैदिक-सिद्धान्त-मीमांसा**—(प्रथमभाग)—पं० युधिष्ठिर मीमांसक

द्वारा लिखित १९ वेदविषयक निबन्धों का अपूर्व संग्रह। १५०.००

२०. **वैदिक-सिद्धान्त-मीमांसा**—(द्वितीयभाग)—
पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा विभिन्न समयों में लिखित वेदाङ्गादि विषयक निबन्धों का संग्रह। २००.००

२१. **वैदिक-साहित्य-सौदामिनी**—स्व० श्री पं० वागीश्वर वेदालङ्कार कृत काव्यप्रकाश, साहित्यदर्पण आदि के समान वैदिक साहित्य पर शास्त्रीय विवेचनात्मक ग्रन्थ। यन्त्रस्थ

२२. **वेद-श्रुति-आम्नाय-संज्ञामीमांसा**—(संस्कृत-हिन्दी)—
लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें सप्रमाण दर्शाया गया है कि मन्त्रों की ही वेद संज्ञा है। ब्राह्मणग्रन्थों में वेद-श्रुति-आम्नाय-संज्ञा पारिभाषिक और केवल यज्ञीय प्रकरण तक ही सीमित है। ३०.००

२३. **वैदिक-छन्दोमीमांसा**—लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। वैदिक छन्दःशास्त्र सम्बन्धी पाँच प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर प्रत्येक छन्द के भेद-प्रभेद और उदाहरण दिये हैं। १००.००

२४. **वैदिक-स्वरमीमांसा**—लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। वेद में प्रयुक्त उदात्तादि स्वरों का विस्तृत विवेचन किया गया है। स्वर-शास्त्र के अज्ञान के कारण होने वाली भूलों का निदर्शन एवं स्वरभेद से होने वाले अर्थभेद को दर्शाया है। १००.००

२५. **वेदार्थ-भूमिका** (हिन्दी)—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। ४०.००

२६. **वेदार्थ-भूमिका** (संस्कृत)—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। ६०.००

२७. **वेदार्थ-भूमिका** (संस्कृत-हिन्दी)—
स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। यन्त्रस्थ

२८. **वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त विविध स्वराङ्कन प्रकार—**
पं० युधिष्ठिर मीमांसक। २०.००

२९. **यजुर्वेद-भाष्य-संग्रह तथा अपाणिनीयपदविमर्श।** यन्त्रस्थ

३०. **वेदों का महत्त्व तथा उनके प्रचार के उपाय, वेदार्थ की विविध प्रक्रियाओं की ऐतिहासिक मीमांसा—**
लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक ३०.००

३१. **देवापि और शान्तनु के वैदिक आख्यान का वास्तविक स्वरूप**—लेखक—श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। १०.००

३२. **वेद और निरुक्त**—श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। १०.००

३३. **निरुक्तकार और वेद में इतिहास**—पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। यन्त्रस्थ

३४. **त्वाष्ट्री-सरण्यू के आख्यान का वास्तविक स्वरूप**—लेखक—पं० धर्मदेव जी निरुक्ताचार्य। १०.००

३५. **वेद के आख्यानों का यथार्थ स्वरूप**—लेखक—वैद्य रामगोपाल शास्त्री। १०.००

३६. **कतिपय वैदिक शब्दों के अर्थों की मीमांसा**—लेखक—ईश्वर चन्द्र जी विद्यासागर। यन्त्रस्थ

३७. **वैदिक-जीवन**—पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्त्तण्ड द्वारा अथर्ववेद के आधार पर वैदिक जीवन के सम्बन्ध में लिखा गया अत्यन्त उपयोगी स्वाध्याय योग्य ग्रन्थ। सुन्दर आकर्षक जिल्द। ८०.००

३८. **वैदिक-गृहस्थाश्रम**—पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्त्तण्ड द्वारा अथर्ववेद के आधार पर लिखित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। १५०.००

३९. **वैदिक-पीयूषधारा**—लेखक श्री देवेन्द्र कुमार कपूर। चुने हुए पचास मन्त्रों की प्रतिमन्त्र पदार्थपूर्वक विस्तृत व्याख्या, अन्त में भावपूर्ण गीतों से युक्त। सुन्दर आकर्षक जिल्द। ८०.००

४०. **क्या वेद में आर्यों और आदिवासियों के युद्धों का वर्णन है ?**—लेखक—श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री। २५.००

४१. **उरु-ज्योतिः**—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित वेद-विषयक स्वाध्याय योग्य निबन्धों का संग्रह। १००.००

४२. **वेदों की प्रामाणिकता**—डॉ० श्रीनिवास शास्त्री। यन्त्रस्थ

४३. Anthology of Vedic Hymns—स्वामी भूमानन्द सरस्वती। ३००.००

४४. Success Motivation Vedic Lores—लेखक—श्री देवेन्द्र कुमार कपूर। ५०.००

४५. The blossoming flowers of the veda-वेदों के खिले हुए फूल— Dr. Sudyumna Acharya. ४०.००

II. कर्मकाण्ड-विषयक ग्रन्थ

४६. **बौधायन-श्रौतसूत्रम्**—(दर्शपूर्णमास-प्रकरण)—भवस्वामी तथा सायण कृत भाष्य सहित (संस्कृत)। १२०.००

४७. **बौधायन-श्रौतसूत्रम्**—(आधान-प्रकरण)—सुबोधिनीवृत्ति और आधान प्रक्रिया सहित (संस्कृत)। ८०.००

४८. **दर्शपूर्णमास-पद्धति**—पं० भीमसेन कृत भाषार्थ सहित। दर्श-पौर्णमास समस्त श्रौतयज्ञों की प्रकृति रूप है। इसके परिज्ञान से अन्य यज्ञों की प्रक्रिया जानने में सहायता मिलती है। ५०.००

४९. **श्रौतपदार्थनिर्वचनम्**—(संस्कृत)—अग्न्याधान से अग्निष्टोम पर्यन्त अध्वर्यु ऋत्विक् सम्बन्धी यज्ञ में क्रियमाण सभी पदार्थों का विवरणात्मक ग्रन्थ। १५०.००

५०. **श्रौतयज्ञ-मीमांसा**—(संस्कृत-हिन्दी)—लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें श्रौतयज्ञों की उत्पत्ति, प्रयोजन, उनमें परिवर्त्तन तथा पशुयज्ञों पर विस्तार से विवेचना की गई है। १००.००

५१. **अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधपर्यन्त श्रौतयज्ञों का संक्षिप्त परिचय**—लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक, डॉ० विजयपाल। इस ग्रन्थ में अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, सुपर्णचिति सहित सोमयाग, चातुर्मास्य और वाजपेय आदि यागों का वर्णन है। अन्त में चितियों के चित्र भी दिये हैं। १२०.००

५२. **यजुर्वेद का स्वाध्याय तथा पशुयज्ञ समीक्षा**— लेखक—पं० विश्वनाथ वेदोपाध्याय। ४०.००

५३. **शतपथब्राह्मणस्थ अग्निचयनसमीक्षा**—लेखक—पं० विश्वनाथ वेदोपाध्याय। १००.००

५४. **शतपथ के दशपथ**—(दो भाग) डॉ० वेदपाल सुनीथ। ८०.००

५५. **कात्यायन-गृह्यसूत्रम्**—(मूल) ५०.००

५६. **संस्कार-विधि**—ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत। ४०.००

५७. **संस्कार-भास्कर**—संस्कार-विधि की स्वामी विद्यानन्द सरस्वती कृत व्याख्या। ३००.००

५८. **संस्कार-विधि-मण्डनम्**—वैद्य श्री रामगोपाल जी शास्त्री। संस्कार-विधि की व्याख्या। ३०.००

५९. **वेदोक्त-संस्कार-प्रकाश**—पं० बाला जी विट्ठल गांवस्कर द्वारा मूल मराठी में लिखे ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद। इसी का गुजराती अनुवाद संशोधित संस्कार-विधि का आधार बना। ७०.००

६०. **वैदिक-नित्यकर्मविधि**—व्याख्याकार—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। सन्ध्यादि पञ्च महायज्ञ तथा बृहद् हवन के मन्त्रों की पदार्थ तथा भावार्थ व्याख्या सहित। ४०.००

६१. **वैदिक-नित्यकर्मविधि**—(मूलमात्र)—सन्ध्या तथा स्वस्तिवाचन आदि बृहद् हवन के मन्त्रों सहित। १८.००

६२. **दैनिक-नित्यकर्मविधि**—(मूलमात्र)— ४.००

६३. **पञ्चमहायज्ञविधि**—ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत। १५.००

६४. **सन्ध्योपासन-अग्निहोत्रविधि**—(हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्यासहित) —अनुवादक—डॉ० विजयपाल विद्यावारिधि। ३०.००

६५. **वैदिकयज्ञों का स्वरूप**—लेखक—डॉ० कृष्णलाल। ३०.००

६६. **आश्वलायनसूत्रप्रयोगदीपिका**—सम्पादक—ब्र० धर्मवीर विद्यावारिधि। इसमें आश्वलायन श्रौतसूत्रानुसार श्री मञ्चनाचार्य ने श्रौतयागों में दर्शपूर्णमासेष्टि से लेकर अश्वमेधादि यज्ञों का संस्कृत में विवेचन किया है। परिशिष्ट एवं टिप्पणियों से युक्त। १००.००

III. शिक्षा-निरुक्त-व्याकरण-छन्दःशास्त्र विषयक ग्रन्थ

६७. **वर्णोच्चारण-शिक्षा**—ऋषि दयानन्द कृत हिन्दी व्याख्या। इसमें वर्णों के शुद्ध उच्चारण के लिए स्थान-प्रयत्नादि का विधान है। ६.००

६८. **शिक्षासूत्राणि**—आपिशल-पाणिनीय-चान्द्र-शिक्षा-सूत्र। १५.००

६९. **शिक्षा-कल्प-आर्ष-चिन्तनम्**—आचार्य धर्मवीर। ३०.००

७०. **वर्णोच्चारण शिक्षा चिन्तनम्**—आचार्य धर्मवीर। यन्त्रस्थ

७१. **शिक्षा-शास्त्रम्**—आचार्य उदयन मीमांसक। २५०.००

७२. **निघण्टु-निर्वचनम्**—देवराजयज्वाकृत निघण्टु—व्याख्या। सम्पादक—डॉ० सुद्युम्न आचार्य। संशोधक—डॉ० विजयपाल विद्यावारिधि। २००.००

७३. **निरुक्त-श्लोकवार्तिकम्**—(संस्कृत)—सम्पादक—

डॉ० विजयपाल विद्यावारिधि। केरलदेशीय नीलकण्ठ गार्ग्य विरचित। एकमात्र मलयालम लिपि में ताडपत्र पर लिखित दुर्लभ प्रति के आधार पर मुद्रित। आरम्भ में निरुक्तशास्त्र विषयक संक्षिप्त ऐतिह्य दिया गया है। ३५०.००

७४. **निरुक्त-समुच्चय**—(संस्कृत)—आचार्य वररुचि विरचित। इसमें चार कल्पों में १०० मन्त्रों की नैरुक्तप्रक्रियानुसार व्याख्या की गई है। सम्पादक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। ३०.००

७५. **निरुक्त-शास्त्रम्**—(हिन्दी-व्याख्या) पं० भगवद्दत्त जी। ४००.००

७६. **यास्कीय-निघण्टुः श्लोकीकृतः**—आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र ३०.००

७७. **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**—(मूल)। २०.००

७८. **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**—(यतिबोधयुक्तः)। ५०.००

७९. **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**—(मूल, गुटका-आकार)। २०.००

८०. **अष्टाध्यायीभाष्य**—(संस्कृत-हिन्दी)—श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत। इसके संस्कृत भाग में प्रत्येक सूत्र का पदच्छेद, विभक्ति, समास और आने वाली अनुवृत्ति का निर्देश करके सरल संस्कृत में सूत्र की वृत्ति और उदाहरण दिये हैं। प्रत्येक भाग के अन्त में उदाहरणों की सिद्धि की प्रक्रिया दर्शाई है।
प्रथमभाग—२५०.००, द्वितीयभाग—२००.००, तृतीयभाग—२५०.००

८१. **धातुपाठः**—(धातुसूचीसहित)। ३०.००

८२. **क्षीरतरङ्गिणी**—क्षीरस्वामी कृत। पाणिनीय धातुपाठ की सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक व्याख्या। १७०.००

८३. **धातुप्रदीप**—मैत्रेयरक्षितविरचित पाणिनीय धातुपाठव्याख्या। यन्त्रस्थ

८४. **संस्कृत-धातु-कोष**—सम्पादक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। पाणिनीय धातुओं का हिन्दी में अर्थनिर्देश। ७०.००

८५. **संस्कृत-वाक्य-प्रबोध**—स्वामी दयानन्द सरस्वती। ३०.००

८६. **माधवीय-धातुवृत्ति**—आचार्य सायण रचित, धातुपाठ की प्रामाणिक व्याख्या। नवीन संशोधित, शुद्धतम संस्करण। सहस्रों टिप्पणियों से युक्त। सम्पादक—डॉ० विजयपाल विद्यावारिधि। ६५०.००

८७. **फिट्सूत्राष्टाध्याय्योः स्वरशास्त्राणां तुलनात्मकमध्ययनम्**—डॉ० धर्मवीर विद्यावारिधि। १५०.००

८८. **पारिभाषिकः**—(संस्कृत)—व्याख्याकार—आचार्य प्रद्युम्न। व्याकरण की परिभाषाओं की प्रामाणिक, सरल व्याख्या। १००.००

८९. **काशिका**—(मूलमात्र)—वामनजयादित्यविरचित प्रामाणिक अष्टाध्यायी-व्याख्या। नवीन संशोधित, शुद्धतम संस्करण। सहस्रों टिप्पणियों से युक्त। सम्पादक—डॉ० विजयपाल विद्यावारिधि। ७००.००

९०. **भागवृत्तिसंकलनम्**—अष्टाध्यायी की प्राचीन अनुपलब्ध वृत्ति के ग्रन्थान्तरों में उद्धृत दो सौ उद्धरणों का संकलन किया गया है। काशिका के अनन्तर यही वृत्ति प्रामाणिक मानी गई है। ३०.००

९१. **महाभाष्य**—हिन्दीव्याख्या—(द्वितीय अध्याय पर्यन्त)—
व्याख्याकार— पं० युधिष्ठिर मीमांसक।
प्रथमभाग (प्रथमखण्ड)—३५०.००, द्वितीयखण्ड—२००.००,
द्वितीय भाग—२००.००, तृतीय भाग—३००.००,
डॉ० सुद्युम्न आचार्य कृत हिन्दीव्याख्यासहित—(षष्ठ अध्याय पर्यन्त)
चतुर्थभाग—३५०.००, पञ्चमभाग—३००.००,
षष्ठभाग—२००.००, सप्तमभाग—७००.००

९२. **संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि**—लेखक श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। इस ग्रन्थ की सरलता का अनुभव करके इसके आधार पर उत्तरप्रदेश तथा अन्य प्रदेश के नगरों में प्रतिवर्ष अनेक शिविर आयोजित किये जाते रहे हैं।
प्रथमभाग—१००.००, द्वितीयभाग—१२५.००

९३. The Tested Easiest Method of Learning Teaching Sanskrit (First Book)—यह पुस्तक श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी कृत 'संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि' के प्रथमभाग का अंग्रेजी अनुवाद है। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पाणिनीय व्याकरण में प्रवेश करने वालों के लिए यह आधिकारिक पुस्तक है। २००.००

९४. **उणादिकोष**—पञ्चपादी उणादि सूत्रों की ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत व्याख्या तथा पं० युधिष्ठिर मीमांसक कृत टिप्पणियों एवं ११

सूचियों सहित। १००.००

९५. **दशपाद्युणादिवृत्ति-संग्रह**—प्रथमभाग में अतिप्राचीन माणिक्यदेव विरचित वृत्ति है। इस पर व्याकरणादि शास्त्रों से सम्बद्ध शतशः टिप्पणियां तथा अन्त में सूत्र, प्रत्यय एवं शब्द सूचियां दी हैं। सम्पादक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक, चन्द्रदत्त शर्मा। यन्त्रस्थ

९६. **दशपाद्युणादिवृत्ति-संग्रह**—द्वितीयभाग में दो अज्ञातनामा वृत्तिकारों की वृत्तियां तथा विट्ठलाचार्य कृत वृत्ति दी गई है। यन्त्रस्थ

९७. **गणरत्नावली**—(संस्कृत)—भट्टयज्ञेश्वरकृत पाणिनीय गणपाठ की व्याख्या। सम्पादक—चन्द्रदत्त शर्मा। यन्त्रस्थ

९८. **वामनीयं लिङ्गानुशासनम्**—वामनदेव-स्वोपज्ञव्याख्या सहित। इसमें केवल संस्कृत भाषा के शब्दों का लिङ्ग बताया गया है। व्याख्या पाणिनीय व्याकरणानुसार है। यन्त्रस्थ

९९. **दैवम्, पुरुषकार-वार्त्तिकोपेतम्**—लीलाशुक मुनि कृत। इसमें पाणिनीय धातुपाठ में जो धातु अनेक गणों में पढ़ी हैं, उन पर विचार किया गया है। ५०.००

१००. **अष्टाध्यायीशुक्लयजुःप्रातिशाख्ययोर्मतविमर्शः**—(संस्कृत)—डॉ० विजयपाल विद्यावारिधि विरचित पी० एच० डी० का महत्त्वपूर्ण शोध प्रबन्ध। यन्त्रस्थ

१०१. **शब्दरूपावली**—बिना रटे शब्दरूपों का ज्ञान कराने वाली। लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। ३०.००

१०२. **पिङ्गलनागछन्दोविचितिभाष्यम्**—यादव प्रकाश द्वारा विरचित भाष्य। इसकी प्रमुख विशेषता है कि इसमें छन्दों के जो उदाहरण दिए हैं वे अश्लीलता के दोष से रहित हैं। अतः गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी है। यन्त्रस्थ

१०३. **काशकृत्स्न-व्याकरणम्**—पाणिनि से प्राचीन काशकृत्स्न-व्याकरण के उपलब्ध १५३ सूत्रों की संस्कृत में विस्तृत व्याख्या। सम्पादक एवं व्याख्याता—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। ३०.००

१०४. **संस्कृत-व्याकरणशास्त्र का इतिहास**—लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें पाणिनि से प्राचीन २३ वैयाकरणों तथा उससे उत्तरवर्त्ती १८ वैयाकरणों, उन पर टीका-टिप्पणी लिखने वाले

१०० से अधिक व्याख्याताओं का इतिहास लिखा है। तत्पश्चात् सभी व्याकरणों के धातुपाठ, उणादिसूत्र, लिङ्गानुशासन, परिभाषापाठ आदि के प्रवक्ताओं, व्याख्याताओं व्याकरण के दार्शनिक तथा काव्यप्रणेता वैयाकरणों का इतिवृत्त दिया गया है।

प्रथमभाग—४००.००, द्वितीयभाग—४००.००

IV. अध्यात्म-विषयक-ग्रन्थ

१०५. **ईश-केन-कठ-उपनिषद्**—श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री कृत हिन्दी—अंग्रेजी व्याख्या सहित। ३.००, ३.००, ३०.००

१०६. **तत्त्वमसि अथवा अद्वैत मीमांसा**—लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों मूल तत्त्वों का प्रतिपादन करने वाला दार्शनिक ग्रन्थ। २००.००

१०७. **प्रपञ्च-हृदयम् तथा प्रस्थान-भेद**—(संस्कृत)—प्रथम—अज्ञातकर्तृक प्रपञ्च-हृदय में वैदिक वाङ्मय का संक्षिप्त सारगर्भित परिचय, द्वितीय ग्रन्थ मधुसूदन सरस्वतीकृत प्रस्थान-भेद में दर्शनों का संक्षेप में परिचय दिया है। ४०.००

१०८. **ध्यानयोग-प्रकाश**—स्वामी दयानन्द सरस्वती के योग विद्या के शिष्य स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत। १२०.००

१०९. **पुरुषार्थ-प्रकाश**—स्वा० विश्वेश्वरानन्द, ब्र० नित्यानन्दकृत। १२५.००

११०. **अनासक्तियोग-मोक्ष की पगदण्डी**—लेखक—श्री पं० जगन्नाथ पथिक। १५०.००

१११. **आर्याभिविनय**—(हिन्दी)—ऋषि दयानन्द सरस्वती। ३०.००

११२. Aryabhivinaya—English Translation & notes—स्वामी भूमानन्द सरस्वती। ३०.००

११३. **वैदिक-ईश्वरोपासना**—(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से संकलित) यन्त्रस्थ

११४. **विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्**—(सत्यभाष्यसहितम्)—पं० सत्यदेव वासिष्ठकृत संस्कृत और हिन्दी में विस्तृत आध्यात्मिक वैदिक भाष्य। (चार भागों में) ---

११५. **त्रैतसिद्धान्तादर्श**—पं० शिवशङ्कर शर्मा काव्यतीर्थ। २५०.००

११६. The Riddle of Life and Death—लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। २०.००

११७. **जन्म-जीवन-मृत्यु**—लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। ३०.००

११८. **गीता सुमन**—टीकाकार—वैद्य रामगोपाल शास्त्री। १०.००

११९. **अगम्य पन्थ के यात्री को आत्मदर्शन**—चञ्चल बहिन। ५०.००

१२०. **आत्मा की जीवनगाथा**—श्री कर्मनारायण कपूर। १०.००

१२१. **मानवता की ओर**—श्री शान्ति स्वरूप कपूर के विविध विचारोत्तेजक सरल भाषा में लिखे गए लेखों का संग्रह। १०.००

१२२. **विचार-सौरभ**—श्रीमती शन्नो भाटिया। प्रथमभाग—२०.००, द्वितीयभाग—२०.००

१२३. **ज्ञान-गङ्गा**—श्रीमती शन्नो भाटिया। २०.००

१२४. **आनन्दमय पथ की ओर**—श्रीमती शन्नो भाटिया। ४०.००

१२५. **आत्मा को जानो और खुश रहो**—श्रीमती शन्नो भाटिया। ३०.००

१२६. **आत्म या मनोबल**—श्रीमती शन्नो भाटिया। ४०.००

१२७. **दिव्य जीवन की राह पर**—श्रीमती सत्या पथरिया। ४०.००

१२८. **ज्ञानसुधा**—श्रीमती सत्या पथरिया। ४०.००

१२९. **सन्ध्या से समाधि**—स्वामी वेदानन्द सरस्वती। २००.००

१३०. **स्वर्ग-सोपान**—स्वामी वेदानन्द सरस्वती। २००.००

१३१. **स्वस्ति पथ अर्थात् श्रेयमार्ग**—स्वामी वेदानन्द सरस्वती। १५०.००

१३२. **ऋषि-कल्प**—स्वामी वेदानन्द सरस्वती। ६०.००

१३३. **देवों की दिग्विजय**—स्वामी वेदानन्द सरस्वती। ३०.००

१३४. **प्राचीन भारत में प्रजातन्त्र का स्वरूप व आज का संसद**—डॉ० महक सिंह देव एवं स्वामी वेदानन्द सरस्वती। ५०.००

V. नीतिशास्त्र-इतिहास-विषयक ग्रन्थ

१३५. **वाल्मीकि-रामायण**—श्री पं० अखिलानन्द जी कृत हिन्दी अनुवाद। बाल काण्ड—५०.००, अयोध्याकाण्ड—९०.००, अरण्य-किष्किन्धा काण्ड—११०.००, सुन्दरकाण्ड—७०.००, युद्धकाण्ड— यन्त्रस्थ।

१३६. **शुक्रनीतिसार**—व्याख्याकार—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती। भारतीय राजनीति का परम प्रामाणिक ग्रन्थ। विस्तृत विषयसूची तथा श्लोकसूची सहित। २००.००

१३७. **विदुरनीति**—पं० युधिष्ठिर मीमांसक कृत प्रतिपद पदार्थ और व्याख्या सहित। इसमें राजनीति व धर्मनीति दोनों का अद्भुत समन्वय है। १५०.००

१३८. **सत्याग्रहनीतिकाव्यम्**—आर्य समाज सत्याग्रह १९३९ ई० में हैदराबाद जेल में पं० सत्यदेव वासिष्ठ द्वारा विरचित। हिन्दी व्याख्या। ५०.००

१३९. **ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास**—लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थों का विशद इतिहास दिया गया है। परिशिष्ट में पाण्डुलिपियों तथा अमुद्रित ग्रन्थों का विस्तृत विवरण दिया है। ३५०.००

१४०. **विरजानन्द-प्रकाश**—लेखक—पं० भीमसेन शास्त्री एम० ए०। १०.००

१४१. **ऋषि दयानन्द सरस्वती का स्वलिखित तथा स्वकथित आत्म-चरित**—सम्पादक—पं० भगवद्दत्त जी। १०.००

१४२. **आत्म-परिचय**—(वंशपरिचय एवं पूर्वजपरिचय सहित)—लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी ने अपने पूर्वज, विशेष करके पिता गौरी लाल आचार्य के वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में किए गए उन कार्यों का उल्लेख किया है, जिनके कारण इन्दौर राज्यप्रशासन उन्हें परेशान करता रहा। अन्त में स्वपरिचय दिया है। वस्तुतः यह ग्रन्थ किसी वंश या व्यक्तिविशेष का परिचय मात्र ही नहीं है। अपितु उस समय की आर्य समाजों, शिरोमणि सभाओं, सार्वदेशिक सभा तथा आर्य समाज की विविध संस्थाओं के इतिहास का महत्त्वपूर्ण अभिलेख है। इससे उस समय के आर्य समाज के इतिहास पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। १५०.००

१४३. **आचार्य विजयपाल विद्यावारिधि, जीचन-परिचय**—लेखक— स्वामी वेदानन्द सरस्वती। आचार्यश्री के जीवन के संक्षिप्त परिचय के साथ-साथ आचार्यश्री प्रद्युम्न जी द्वारा अध्यापन काल में उद्बुद्ध आध्यात्मिक, व्याकरण, दर्शन सम्बन्धित शंकाओं का जो समाधान आचार्यश्री द्वारा किया गया। उनका संकलन भी इस ग्रन्थ में किया गया है। १५०.००

VI. दर्शन-आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ

१४४. **मीमांसाशाबरभाष्यम्**—(मूल-संस्कृत)—सम्पादक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। अनेक परिशिष्ट तथा टिप्पणियों से युक्त। प्रथमभाग (३ अध्याय)। २००.००

१४५. **मीमांसाशाबरभाष्यम्**—पं० युधिष्ठिर मीमांसक कृत आर्षमत-विमर्शिनी हिन्दी व्याख्या सहित। ७ भागों में।

१४६. **नाडीतत्त्वदर्शनम्**—(संस्कृत-हिन्दी)—पं० सत्यदेव वासिष्ठ। इस ग्रन्थ में नाड़ियों में होने वाले दोषों के कारण, निदान, दूत-नाड़ी से रोगी का उपचार वर्णित है। नाड़ी विषयक एक सम्पूर्ण ग्रन्थ २००.००

१४७. **पथ पथिक पाथेय**—जगदीशाचार्य। १०.००

१४८. **स्वास्थ्य के मूलभूतसिद्धान्त**—स्वामी वेदानन्द सरस्वती यन्त्रस्थ

१४९. **आहार-दर्पण**—पं० रामगोपाल शास्त्री वैद्य। यन्त्रस्थ

१५०. **सिद्धान्त-शतकम्**—(संस्कृत-हिन्दी)—श्री जयदत्त उप्रेती। ३०.००

VII. प्रकीर्ण-ग्रन्थ

१५१. **सत्यार्थ-प्रकाश**—दो परिशिष्ट, शतशः टिप्पणियों व सन् १८७५ के प्रथम संस्करण के विशिष्ट उद्धरणों सहित। १००.००

१५२. **सत्यार्थ-भास्कर**—लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती—महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ-प्रकाश में वर्णित प्रत्येक सिद्धान्त-वाक्य-शब्द की पुष्टि इस ग्रन्थ में है। दो भागों में पूर्ण।
प्रथमभाग—६००.००, द्वितीयभाग—५००.००

१५३. **मनुष्यमात्र का परममित्र स्वायम्भुव मनु**—
पं० भगवद्दत्त रिसर्चस्कालर। यन्त्रस्थ

१५४. **पाश्चात्त्य भारतविद्—उद्देश्यों का अध्ययन**—पं० भगवद्दत्त

रिसर्चस्कालर। अनुवादक—श्री देवदत्त आर्य। १०.००

१५५. **भारतीय प्राचीन राजनीति**—पं० भगवद्दत्त रिसर्चस्कालर। यन्त्रस्थ

१५६. **हिन्दुओं का भविष्य**—डॉ० हरिश्चन्द्र। ५.००

१५७. **ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन**—सम्पादक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें ऋषि दयानन्द के उपलब्ध पत्र और विज्ञापन संगृहीत किये गए हैं। यह संग्रह चार भागों में छपा है। प्रथम दो भागों में ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन आदि संगृहीत हैं। तीसरे-चौथे भाग में विविध व्यक्तियों द्वारा ऋषि दयानन्द को लिखे गए पत्रों का संग्रह है।

द्वितीय संस्करण—नया संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण।
प्रथमभाग—१५०.००, द्वितीयभाग—१५०.००
तृतीयभाग—१५०.००, चतुर्थभाग—१००.००

१५८. **भागवतखण्डनम्**—(भाषार्थसहित)—ऋषि दयानन्द की प्रथम कृति। अनुवादक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। यन्त्रस्थ

१५९. **जगद्गुरु दयानन्द का संसार पर जादू**—
श्रीमेहताजैमिनि। ५.००

१६०. **व्यवहारभानु**—ऋषि दयानन्द कृत। (प्रचारार्थ) १०.००

१६१. **आर्योद्देश्यरत्नमाला**—ऋषि दयानन्द कृत। ६.००

१६२. **कन्योपनयनविधि**—अर्थात् 'कन्योपनयन-प्रतिषेध' ग्रन्थ का खण्डन। श्री पं० महाराणी शङ्कर। अपने विषय की सुन्दर, सामयिक पुस्तक। १५.००

१६३. **ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बद्ध कतिपय महत्त्वपूर्ण अभिलेख**—इसमें ऋ० द० के नए उपलब्ध पत्र, मुम्बई आर्यसमाज के आदिम २८ नियमों की ऋ० द० कृत व्याख्या पं० गोपाल राव हरिदेश मुख लिखित दयानन्द चरित मराठी एवम् आर्यसमाज काकड़वाड़ी मुम्बई की पुरानी गुजराती में लिखित कार्यवाही का हिन्दी रूपान्तर है। यन्त्रस्थ

१६४. **मेरी दृष्टि में ऋषि दयानन्द और उनके कार्य**—पं० युधिष्ठिर मीमांसक का सम्पूर्ण जीवन ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के अध्ययन

सम्पादन-विवेचन और प्रकाशन में बीता है। आपकी अनुभव-परिपुष्ट दृष्टि ने ऋषि दयानन्द और उनके कार्य को किस रूप में देखा, समझा है, इसका विस्तृत निरूपण इस ग्रन्थ में किया गया है। १००.००

१६५. **अथ शास्त्रार्थ और सद्धर्मविचार**—
ऐतिहासिक काशीशास्त्रार्थ। यन्त्रस्थ

१६६. **भारत के समस्त रोगों की अचूक औषध ऋषि-प्रणाली**—श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने इस लघु पुस्तिका के माध्यम से आज राष्ट्र में व्याप्त अत्याचार, दुराचार, बलात्कार, बेइमानी, लूट-खसोट, राजनीतिक अस्थिरता, चारित्रिक पतन आदि असाध्य राष्ट्रीय रोगों की एक मात्र औषध आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन-अध्यापन को बताया है। १०.००

१६७. **जिज्ञासु-रचना-मञ्जरी**—(प्रथमभाग)—१५ अक्टूबर १९९२ से १३ अक्टूबर १९९३ वर्ष में आयोजित गुरुवर स्व० पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु जन्म-शताब्दी के अवसर पर उनके लघु ग्रन्थों को इस भाग में इकट्ठा प्रकाशित किया है। १२०.००

१६८. **जिज्ञासु-रचना-मञ्जरी**—(द्वितीयभाग)—इसमें जिज्ञासु जी के उपलब्ध समस्त लेख व वेदवाणी के लिए विभिन्न समयों पर लिखे गए सम्पादकीय तथा भूमिकाएँ भी संगृहीत हैं। १५०.००

१६९. **आर्यसमाज के दिग्गज विद्वानों का शास्त्रार्थ**—यह शास्त्रार्थ वेद में इतिहास है वा नहीं विषय पर लाहौर में महात्मा हंसराज जी के सभापतित्व में हुआ था। ३०.००

१७०. **दयानन्द-शास्त्रार्थ-संग्रह**— यन्त्रस्थ

१७१. **दयानन्द-प्रवचन-संग्रह**—(पूना-मुम्बई प्रवचन) यन्त्रस्थ

१७२. **अष्टोत्तरशतनाममालिका**—लेखक—पं० विद्यासागर शास्त्री। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास की सुन्दर प्रामाणिक व्याख्या। ७०.००

१७३. **ऋषि दयानन्द की पदप्रयोग शैली**—लेखक—पं० युधिष्ठिर मीमांसक। इसमें ऋषि दयानन्द के यजुर्वेद-भाष्य में प्रयुक्त कतिपय ऐसे शब्दों जिन्हें आधुनिक वैयाकरण अशुद्ध मानते हैं, पर पाणिनीय

दृष्टि से विचार किया है। २०.००

१७४. **प्यारा ऋषि**—श्री आनन्द स्वामी जी। ऋषि दयानन्द के जीवन की प्रेरणाप्रद घटनाएँ। १०.००

१७५. **पाथेयम्**—(संस्कृत)—जगदीशाचार्य। ३०.००

१७६. **आचार्य श्री विजयपाल विद्यावारिधि, अभिनन्दन-ग्रन्थ**—इसको दो भागो में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में आचार्यश्री के शिष्यों-प्रशिष्यों-परिचितों के संस्मरण एवं द्वितीय भाग में विशिष्ट विद्वानों द्वारा लिखित 'वैदिक अनुसन्धानात्मक' लेखों का संग्रह किया गया है। १५०.००

१७७. **पं युधिष्ठिर मीमांसक जन्म-शताब्दी विशेषाङ्क**—इसको दो भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में पण्डित जी से सम्बन्धित संस्मरणों एवं द्वितीय भाग में वेद-वेदाङ्गों से सम्बन्धित अनुसन्धानात्मक तथा मीमांसक जी के तीन अप्रकाशित लेखों का संग्रह किया गया है। १००.००

१७८. **पं युधिष्ठिर मीमांसक जन्म-शताब्दी समारोह स्मारिका**—इसको दो भागों में विभक्त किया है। प्रथम भाग में पण्डित जी के शिष्यों-प्रशिष्यों के संस्मरण-श्रद्धाञ्जलि एवं द्वितीय भाग में वेद-वेदाङ्गों से सम्बन्धित अनुसन्धानात्मक तथा मीमांसक जी के तीन अप्रकाशित लेखों का संग्रह किया गया है। १५०.००

१७९. **उपवेद विशेषाङ्क**— ५०.००

१८०. **वैदिक ऋषि विशेषाङ्क**— ५०.००

'वेदवाणी' पत्रिका का शुल्क, **'पाणिनि महाविद्यालय'** तथा **'रामलाल कपूर ट्रस्ट'** में दिया जाने वाला दान अथवा पुस्तकों की खरीद हेतु दी जाने वाली राशि किसी व्यक्ति-विशेष के बैंक खाते, पेटीएम अथवा व्यक्ति-विशेष को न देकर संस्था के निर्दिष्ट बैंक खाता क्रमांक में तथा धनादेश (मनीआर्डर) 'व्यवस्थापक' के नाम से ही भेजें, साथ ही जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर, ट्रस्ट कार्यालय को सूचित करा कर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

विक्रय के कुछ सामान्य नियम

व्यक्तिगत ग्राहक :

१. व्यक्तिगत ग्राहकों को १००.०० रुपये की हमारे प्रकाशन की पुस्तकें लेने पर दस प्रतिशत, ५००.०० रुपये पर १५ प्रतिशत, १०००.०० रुपये पर २० प्रतिशत, ५०००.०० रुपये अथवा उससे अधिक की खरीद पर २५ प्रतिशत की छूट है।

२. पुस्तकें वी० पी० पी० द्वारा नहीं भेजी जातीं। अतः सम्पूर्ण मूल्य पोस्टेज सहित आने पर ही रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजी जाती हैं।

३. हमारे यहाँ से पूरी जाँच के बाद ही माल भेजा जाता है इसलिए डाक, रेल या ट्रांसपोर्ट में खोई पुस्तक का उत्तरदायी ट्रस्ट नहीं होगा।

व्यापारिक ग्राहक (पुस्तक विक्रेता) :

१. व्यापारिक पूछताछ आमन्त्रित है।

२. पोस्टेज तथा मार्गव्यय (ट्रांसपोर्ट) व्यापारी को देना होगा।

३. क्रयादेश में अपना या अपने संस्थान का पूरा नाम, स्थान, डाकघर, बैंक का नाम व शाखा, जिला, राज्य पिनकोड, ई-मेल, फोन नं० आदि साफ-साफ अक्षरों में लिखें।

४. आर्डर की पुस्तकें या पत्रोत्तर दस दिन में न मिले तो समझिये कि आपका पत्र हमें नहीं मिला। अतः शीघ्र दूसरा पत्र लिखें अथवा दूरभाष से सम्पर्क करें।

५. इससे पूर्व का मूल्य-सूची-पत्र अमान्य होगा।

६. सभी विवाद सोनीपत न्याय-क्षेत्र के अधीन होंगे।

७. आप अपने भुगतान की राशि ट्रस्ट के निम्नलिखित बैंक खाते में जमा करा सकते हैं—

बैंक का नाम—युनाइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया, सोनीपत।
खाताधारक का नाम—रामलाल कपूर ट्रस्ट
बैंक खाता संख्या—1466010009553
IFSC कोड—UTBI0SPT751